How to chant Rādhā Nāma?

गुरु का मुख्य कर्तव्य, मुख्य कार्य होता है- जीवों को उनका नाम कैसे लेना है, वह सिखाना। नाम कैसे लिया जाता है? इतना सरल है, नाम तो पता है मुख से लिया जाता है, सबको पता है; ऐसे नहीं लिया जाता नाम। यही तो सीखना और सिखाना है।

नाम मुख से नहीं... अच्छा! हृदय से? नहीं, वह भी नहीं सिर्फ। फिर कहाँ-कहाँ से? मुख से, हृदय से और कण-कण से नाम लेना है। बाहरी और भीतर भी उसका अनुभव करना है। कण-कण... रोम-रोम में मेरे वह नाम चल रहा है। वह नाम मेरे रोम-रोम में चल रहा है। भीतर, एक-एक मेरे खून की बूंद में... एक-एक नस नाड़ी में, इस प्रकार से नाम लेना है। नाम हृदय की गहराई भी नहीं बोल रही, एक-एक कण से पूरा नाम। Our body should reverberate with राधा नाम। Entire body ! एक-एक कण... एक-एक रोम reverberate !

श्याम करते क्या हैं सामान्यतः? वे राधा नाम का उच्चारण करते हैं। दिन-रात! दिन-रात! जैसे हम कर रहे हैं, वैसे ही। और कोई नाम नहीं; यही वाला राधा नाम। यही... बिल्कुल यही। अपनी सारी प्रभुता छोड़कर, उनके रोम-रोम में सब ब्रह्माण्ड वास करते हैं, सारी प्रभुता छोड़कर... सारे भक्तों को छोड़कर, अकेले कुञ्ज में बैठकर राधा नाम का उच्चारण करते हैं और राधारानी के मधुर रूप का ध्यान करते हैं। यही हमने करना है। श्याम क्या हैं? जगत् गुरु।

"वन्दे कृष्ण जगत् गुरु"

वे जगत् गुरु हैं, वे सबको शिक्षा दे रहें हैं। प्रेम प्राप्त करना है? यही दो काम करने हैं। क्या? राधा नाम और राधा रूप का ध्यान। बस हो गया! सब हो गया। ये हो गया, सब हो गया। राधा नाम और राधा रूप का ध्यान; ये हो गया तो सब हो गया।

राधा नाम का चमत्कार तो एक दिन में हो जाएगा। एक दिन में! ज़्यादा दिन करने की ज़रूरत नहीं, एक दिन में चमत्कार! पर राधा नाम सही रूप से लेना होगा।

पता है कैसे लेना है? बताएँ कुछ आपको नुस्खे? देखो! राधा नाम सही रूप से कौन ले सकती हैं? मञ्जरी। मञ्जरी क्या होती हैं? स्वसुख वासना से बिल्कुल रहित, zero स्वसुख वासना। स्वयं के लिए कोई कामना नहीं। तो अगर वास्तव में राधा नाम लेना है, तो यह समझ लो कि चींटी से ब्रह्मा तक सबको देने का प्रयास करो, किसी से लेने का प्रयास नहीं करो। उनसे किसी प्रकार की वासना या कोई चाह न रखो कि ये मुझे सुख दे दे या मेरी कोई बात मान ले। चींटी से ब्रह्मा!

अभी हम क्या करते हैं? चींटी से ब्रह्मा तक सबसे लेना चाहते हैं। यह मेरी बात मान ले... यह ऐसे करे... वह ऐसे करे... वह मुझे ऐसे सुख दे... बहन मुझे ऐसे सुख दे... पत्नी मुझे ऐसे सुख दे... माँ मुझे ऐसे सुख दे... भाई ऐसे सुख दे...

राधानाम लेना है? हाँ, तो स्वसुख वासना से रहित होना पड़ेगा; मतलब चींटी से लेकर ब्रह्मा तक सबको देने की इच्छा। अपने लिए कुछ सुख चाहना ही नहीं है। यह नियम है- सुख की चाहना करके सुख प्राप्त नहीं होगा।

देखो, एक बात सुनो! जब तुम कुछ चाहोगे, तो यह होगा कि तुम्हें कुछ मिलेगा और कुछ नहीं मिलेगा; पर जब तुम कुछ नहीं चाहोगे, तो तुम्हें सब कुछ मिल जाएगा। जब कुछ चाहोगे तो कुछ मिलेगा और कुछ नहीं मिलेगा तुम्हारी चाहों में से। जब तुम कुछ नहीं चाहोगे तो सब कुछ मिल जाएगा।

किसी भी दूसरे से सम्बन्ध अगर रखना है, तो यह सोचो कि उसकी मैं सेवा करूँगा निष्कामता से, तब तो सम्बन्ध ठीक है, नहीं तो पूर्ण रूप से बन्धन है, पूर्ण रूप से भोग है। यह तो योग है राधानाम! और तुम भोग में पड़े हुए योग कैसे करोगे?

अब यह सोचें तपस्या है; यह कोई तपस्या नहीं है। यह केवल बुद्धिमता है। अच्छा! आप बात समझो- आप जब कुछ चाहते हो और आपको मिल जाता है, तब भी आप वैसे ही रहते हो, और जब नहीं मिलता तब भी आप आत्मा वैसे ही रहते है। तो चाह कर कोई पूर्ति हुई या अपूर्ति हुई, आपको क्या फायदा या क्या नुकसान हुआ? एक नुकसान हुआ - एक तो time waste हुआ और दूसरा आपके बन्धन बढ़ गए। और जब आपने ऐसी चीज़ें चाहा...

देखो! यह जो साधना... यह जो राधा नाम है, यह सतोगुण की पराकाष्ठा में लिया जाएगा तो इसका स्फुरण होगा। कम से कम सतोगुण तो चाहिए होगा। आप तो कुछ चाहते ही हो- मैं तो सूट पहनना... latest सूट, latest कपड़े, घूमना-फिरना, खाना-पीना... यही सब पशु वृत्ति। तो जब यही सब चाहते हो, ये तो रजोगुण-तमोगुण की चीज़े हैं; सबसे ऊँची चीज़ हो ही नहीं सकती। जैसे तुमने कुछ चाहा, तो स्फुरण हो ही नहीं सकता भगवान् का। कुछ भी चाहा...

भगवान् का नाम लेना तो ठीक है, अच्छी बात है। पर कैसे लेना है? ये सब secrets हैं इसके, रहस्य। कुछ चाहना ही नहीं है स्वप्न में भी, एक तो यह बात। दूसरा राधा नाम... देखो, रस बल से यह चाह छूटेगी। समझो! रस का बल होगा, तो ये चाहना छूटेगी। रस का बल कैसे होगा? एकान्त में रहने की आदत डालनी चाहिए और अकेले

अपनी कुटिया, कुटिया मतलब कमरा, अपने कमरे में एकान्त में पुकारें राधारानी को। पुकारें!

और कैसे? जब राधा नाम लें, यह बात याद रखें - मुँह से... वह... मुँह के अलावा हृदय से, हृदय के एक-एक कण में, एक-एक खून के कतरे में, दिमाग में पूरा, पूरा ज़हर की तरह फैल जाना चाहिए; प्रेमामृत रूपी ज़हर। प्रेम अमृत - "प्रेमामृत", "नामामृत", "नामानन्द"; इसमें डूबकर जप करें। ऐसा नहीं, राधा राधा राधा... मेरा ध्यान, दिमाग कहीं ओर चल रहा है, मन कहीं ओर चल रहा है। दिमाग पैसे... मन पैसे बनाना चाहता है, calculation चल रही है, मैंने इतने बजे जाना है। अपना पूर्ण विस्मरण करके, कुछ नहीं करना है, कोई पैसे नहीं चाहिए। अकेले !

तो, रस बल जब होगा, जब आनन्द आएगा भगवदीय कार्यों से, तो यह चाहना छूटेगी। और जब चाहना पूरी तरह छूटेगी, तो भगवान् मिलेंगे, स्फुरण होगा।

सेवा जब हम करते हैं, उसी से हमारी चित्त शुद्धि होती है; सेवा करने से। सेवा नहीं करेंगे, तो आप यह सोचो, यह चाहनाएँ चलीं जाएँगी; तो चाह तो कभी नहीं जाएगी बिना सेवा किए। जो सेवा में नहीं डूबा हुआ, 'physical सेवा', यही हाथ-पाँव-टांगो से करने वाली, लिखना... इधर-उधर जाना; यह वाली सेवा, जो इसमें नहीं जुड़ा हुआ, उसकी संसारी इच्छाएँ जाना तो छोड़ो, बढ़ती जाएँगी।

जब हम किसी से कुछ भी चाहते हैं, कुछ भी, कुछ भी, समोसा भी अगर चाहते हैं किसी से... हम तो पता नहीं क्या-क्या चाहते हैं। समोसा भी चाहते हैं, उससे हृदय अशुद्ध हो जाता है, चित्त अशुद्ध हो जाता है। तो अशुद्ध हृदय में क्या भगवान् का स्फुरण होगा? आप कुछ भी चाहोगे, यह pen चाहोगे, आपका हृदय अशुद्ध हो गया। कुछ भी चाहो भगवान् के अलावा, कुछ भी व्यक्ति-वस्तु कोई भी; अशुद्ध हृदय में भगवान नहीं आएँगे। जब कुछ चाहने से हृदय अशुद्ध हो गया तो क्या यह ऊँचे तत्वों का, लीला का, रूप का चिन्तन सम्भव है अशुद्ध हृदय में? तो, कुछ चाहें न किसी से।

हम physical कोई change करने की कभी भी बात नहीं करते। हम कभी भी बात नहीं करते कि घर छोड़ें physically... जहाँ हो वैसे रहो, भीतर से छोड़ दो बस। क्योंकि अगर आप नहीं छोड़ोगे तो आपका अन्तःकरण मल्लीन रहेगा; मल्लीन हृदय में भगवान् का स्फुरण नहीं होता। और मल्लीन हृदय को दूर करने के लिए सेवा करें। अपने घर में रहें, कुछ भी नहीं करना, जो कर रहे हो, घर में रहें, कार्य physical

सब वहीं रहेगा- आँख है तो देखना पड़ेगा, हाँ! कान है तो सुनना पड़ेगा। मगर चाह मत रखो न।

जैसे एक बादल है, वह यहाँ से यहाँ आया तो कुछ छोड़कर आया था कुछ अपना निशान वगैरह? हम भी वैसे रहें न, बिल्कुल unattached. Move तो कर रहा है बादल, हम भी move करेंगे, पर कोई छाप नहीं है, कुछ carry नहीं कर रहा। बादल ने कुछ carry किया पिछला? वह चल रहा है, बल्कि देकर कुछ जा रहा है।

चाहें न कुछ स्वप्न में भी। और राधानाम का इतना अभ्यास हो जाए, इतना अभ्यास हो जाए कि राधा नाम छूटे ही नहीं। चल रहें हैं गाड़ी में कहीं, राधा नाम नहीं छूटना चाहिए। हर समय ! हर समय ! अभ्यास इतना ज़्यादा... यही तो है षड्गोस्वामी अष्टकम् -

"हे राधे व्रजदेविके च ललिते हे नन्दसूनो कुतः।
श्रीगोवर्धन कल्पपादपतले कालिन्दी वने कुतः।।
घोषन्ताव इति सर्वतो व्रजपुरे खेदैर्महाविह्वलो।
वन्दे रूप सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ।।"

(षड्गोस्वामी अष्टकम्)

"हे राधारानी ! आप कहाँ हो? हे श्रीकृष्ण ! आप कहाँ हो... आप कहाँ हो... आप कहाँ हो...?"